राज्य अध्याय 6

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **व्यवस्थाविवरण 8–11**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (व्यवस्थाविवरण 8,9,10 और 11)) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **श्रृंखला 1 का पुनरावलोकन**

श्रृंखला 1 का *पुनरावलोकन करें।* "परमेश्वर का राज्य"।

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5। मैं तुम से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। मैं तुम से सच सच कता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

(2) परमेश्वर के राज्य में बच्चों का स्वागत करें। लूका 18:16–17। बालकों को मरे पास आने दो और उन्हें मना न करोः क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।

(3) परमेश्वर के राज्य का प्रचार करें। मत्ती 24:14। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

(4) परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते समय कभी मुड़कर न देखें। लूका 9:62। जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।

(5) परमेश्वर के राज्य की जीत। दानिय्येल 2:44। उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्त काल तक न टूटेगा, और वह न किसी दूसरी जाति के हाथों में किया जाएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 1:1-16**

परिचय दें। बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए, एक साथ मिलकर **रोमियों 2:1-16** तक का अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 1 में, पौलुस दर्शाता है कि अन्यजातियों को *परमेश्वर के क्रोध का सामना* और परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) को प्राप्त करना ज़रूरी था। रोम में रहने वाले यहूदी पूरी तरह से सहमत हो गयेः ईश्वररहित और दुष्ट अन्यजातियां परमेश्वर के क्रोध की हकदार है और वे अपने कामों से कभी परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन यहूदी लोग आज भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों को न्याय अलग तरीके से करेगें, क्योंकि वे मानते हैं कि यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं और उन्हें विशेष अवसर प्रदान किया गया है। वे मानते हैं कि यहूदी अगर व्यवस्था में बने रहे तो वे परमेश्वर के क्रोध से बच जाएगें। इसीलिए रोमियों 2:1-16 में दर्शाता है कि, यहूदी भी अपने लिए परमेश्वर का क्रोध कमा रहे हैं और अन्यजातियों के समान उन्हें भी परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) की ज़रूरत है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 2:1-16 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखेंः हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

2:1-4

खोज 1. **यहूदियों के भी दोषी ठहरने का कारण।**

(1) यहूदी कपटी थे (रोमियों 2:1)।

यहूदी लोग पूरी तरह से भ्रष्ट थे। वे अधर्म के काम करते थे (रोमियों 1:18) और ऐसे ही काम करने वाले लोगों से प्रसन्न भी रहते थे(रोमियों 1:32)।

यहूदी ऐसा दिखावा करते थे कि वे धर्मी और भले काम करने वाले हैं। वे अन्यजातिों पर दुष्टता करने का दोष लगाते थे, जबकि खुद भी वैसे ही काम किया करते थे(रोमियों 2:21-22)!

अन्यजातियों पर उनकी धार्मिक रीतियों व नैतिक भ्रष्टता को लेकर दोष लगाना तो पूरे यहूदी समाज की राष्ट्रीय विशेषता थी। पौलुस इस वाक्य के द्वारा यहूदियों की इस खासियत को दर्शाता हैः "हे दोष लगाने वालों"। यहूदियों का दूसरों पर दोष लगाना यह साबित करता है कि यहूदी परमेश्वर की धार्मिक व्यवस्था को जानते थे कि जो कोई बुरे काम करेगा वह मृत्यु के दण्ड के योग्य होगा(रोमियों 1:32)। इसलिए अन्यजातियों की दुष्टता के लिए कोई क्षमा नहीं है (रोमियों 1:20), वैसे ही यहूदियों की दुष्टता की कोई क्षमा नहीं है (रोमियों 2:1)। यहूदियों का अंधापन और कपट इतना था कि वे जिन दुष्ट कामों के लिए अन्यजातियों पर दोष लगाया करते थे उन्हें वे खुद अपने जीवन में किया करते थे। वे वास्तव में इस बात से अनजान थे कि जिन बातों के लिए वे अन्यजातियों को दोषी ठहरा रहे थे, उनसे वे अपने आपको ही दोषी ठहरा रहे थे।

(2) यहूदी पूर्वानुमान लगाने वाले थे (रोमियों 2:2-3)।

यहूदियों का मानना था कि यहूदियों का न्याय *सत्य* अर्थात व्यवस्था के आधार पर नहीं वरन् किसी अन्य पैमाने से होगा। उन्हें इस बात की अपेक्षा थी कि परमेश्वर यहूदियों का न्याय, उनके व्यवहार के आधार पर नहीं, वरन् उनके चुने जाने अर्थात देश और परमेश्वर के साथ धार्मिक सम्बन्ध के अनुसार होगा। वे निम्न तथ्यों के आधार पर विश्वास करते थे कि वे विशेष लोग है और वे दण्ड से बच जाएंगेः

- वे एक ही ईश्वर पर विश्वास करते थे (व्यवस्थाविवरण 6:1)
- वे दिन में तीन बार प्रार्थना किया करते थे(दानिय्येल 6:10)
- वे प्रतिवर्ष चौथे महीने में (जकर्याह 8:19) और सप्ताह में दो दिन उपवास किया करे थे (लूका 18)।
- वे प्रति माह अपनी कमाई का दशमांश (मलाकी 3:10; लूका 18:12), वरन् वे धार्मिक कामों के लिए अपनी कमाई का तीसवां हिस्सा दिया करते थे(लैव्यवस्था 27:30; व्यवस्थाविवरण 14:22-29)।
- वे हर वर्ष तीन बार यरूशलेम में तीर्थ यात्रा पर जाया करते थे (व्यवस्थाविवरण 16:16)
- वे अब्राहम के वंशज थे (मत्ती 3:7-12; 8:10-12; यूहन्ना 8:30-44)।
- उनका शारीरिक तौर पर खतना हुआ था (प्रेरितों 15:1,7-11) और वे सोचते थे कि वे व्यवस्था (तोरह और शिरिया) का पालन करने वाले हैं।

हालांकि, परमेश्वर का न्याय उनके "यहूदी" होने के दावे पर आधारित नहीं होगा वरन् उनके वास्तविक जीवन और कामों पर आधारित होगा। परमेश्वर का न्याय या अपराधियों (रोमियों 5:16, 13:2) पर दोष आज्ञा "सत्य" अर्थात "सच्चे तथ्यों पर" आधारित होगा। इसीलिए परमेश्वर के न्याय को पक्षपात रहित कहा जाता है। "परमेश्वर पक्षपात नहीं करता"। यहूदियों को अन्यजातियों से बढ़कर कोई विशेष दर्जा नहीं दिया गया है। यहूदियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे परमेश्वर के न्याय से बच जाएगें।

(3) यहूदी तुच्छ जानते थे (रोमियों 2:4)।

यहूदियों को सम्पूर्ण इतिहास में, परमेश्वर ने यहूदियों पर अपनी भलाई का प्रगट कि, सहनशीलता दिखाई और धीरज धरा है। परमेश्वर ने एक छोटे से देश को अपने निज प्रजा के रूप में चुनकर उन पर अपनी कृपा को प्रगट किया(व्यवस्थाविवरण 7:7-9)। परमेश्वर ने बार उन अपने क्रोध को प्रगट करने से रोककर उन पर अपनी सहनशीलता का परिचय दिया। और परमेश्वर ने लगातार रीस दिलाये जाने पर भी यहूदियों के प्रति धीरज धरा।

यद्यपि, सम्पूर्ण इतिहास काल में और विशेष तौर पर प्रेरित पौलुस के समय में, यहूदियों ने अपने जीवन में परमेश्वर को तुच्छ जाना (प्रेरितों 13:42-52; 17:13; 28:23-28)। उन्होंने अपनी धार्मिकता पर इतना भरोसा था कि उन्होंने यीशु मसीह में होकर प्रगट किये गये परमेश्वर के अनुग्रह को ही अस्वीकार कर दिया। उन्होंने अपने अंधेपन और अपने कठोर *पूर्वानुमानों* के चलते परमश्वेर की कृपा, सहनशीलता और धीरज का बिल्कुल गलत मतलब निकाला और सोचा कि परमेश्वर उनके व्यक्तिगत पापों को नजरअन्दाज करके उन्हें पापें से मुक्त करेगा और उन्हें उनका दण्ड नहीं देगा। यहूदियों को पता था कि अन्यजातियों को मन फिराने की ज़रूरत है। लेकिन वह यह भी मानते थे कि यहूदियों को किसी प्रकार से मन फिराने या पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं है। यहूदी इस बात को नहीं समझ पाये कि उनके साथ परमेश्वर की कृपा, सहनशीलता और धीरज का का मुख्य उद्देश्य उनकी मन फिराव में अगुवाई करना है (2पतरस 3:9)। इसलिए यहूदी हमेशा मन फिराने से इनकार करते रहे (रोमियों 10:21)। अतः पौलुस किसी *विशेष अनुग्रह* की बात नहीं कर रहा है जो लोगों को मन फिराव सिखाता है, (रोमियों 8:29-30), वरन् वह एक *सामान्य अनुग्रह* के बारे में बोलता है जो लोगों की मन फिराव में अगुवाई करने के लिए तैयार की गयी है (प्रेरितों 14:17; 17:24-27)।

2:5-16

खोज 2. **निर्णायक न्याय के दिन परमेश्वर के आदेश की उद्घोषणा।**

(1) वह न्याय का दिन निश्चित तौर पर आ रहा है।

मन फिराने से इन्कार करने के कारण, यहूदी लोग हमेशा परमेश्वर के क्रोध को भड़काते हैं (देखें, अन्यजातियों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को) (रोमियों 1:18)। "परमेश्वर का क्रोध" यहूदियों के पाप के प्रति परमेश्वर का न्याय और सत्य का भाव और उसकी प्रगट प्रतिक्रिया है।

पौलुस के समय में भी परमेश्वर यहूदियों के साथ धीरज धरे हुए थे (देखें: अन्यजातियों के साथ परमेश्वर का धीरज)(2 कुरिन्थियों 6:1-2; 2 पतरस 3:9), क्योंकि उसने उन पर तुरन्त गुस्सा नहीं किया, वरन् उसे न्याय के दिन रख दिया। लेकिन अन्तिम न्याय के दिन परमेश्वर उन यहूदियों पर अपना क्रोध प्रगट करेगा जिन्होंने मन नहीं फिराया है।

(2) न्याय के दिन परमेश्वर के न्याय के पांच मानक (रोमियों 2:6-12)।

पहला। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *सार्वभौमिक* होगा। परमेश्वर सारी गैरयहूदियों और यहूदियों का न्याय करेगें। कोई भी देश नहीं छूटेगा। मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों को अनन्त मृत्यु अर्थात नरक में नहीं डाला जाएगा (यूहन्ना 5:24), लेकिन उनका न्याय उनके जीवन जीने के तरीके के लिए होगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

दूसरा। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *धर्मी होगा।* परमेश्वर हर एक जन का न्याय उसके कामों आधार पर करेगें। अन्तिम न्याय के दिन संसार में सभी जन्म लिए प्राणी न्याय के लिए यीशु मसीह के सिंहासन के सामने आकर खड़े होगें। जीवन की पुस्तक खोली जाएगी और यदि किसी का नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, तो उसे आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:12ख, 15; 21:27)। जीवन की पुस्तक में सारे सच्चे मसीहियों के नाम लिखे होगें (यूहन्ना 5:24;6:37; 10:28-30;17:12)। इसके अलावा एक और पुस्तक खोली जाएगी और लोगों का उनके उन कामों के हिसाब से न्याय होगा जो उसमें लिखे हैं (प्रकाशितवाक्य 20:12; मत्ती 16:27)। लोगों का न्याय दूसरे के पापों के लिए नहीं किया जाएगा (यहेजकेल 18:20)। लेकिन लोगों का न्याय उनके कामों की *गुणवत्ता* के लिए होगा (1कुरिन्थियों 3:12-15)।

तीसरा। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *निष्पक्ष* होगा। परमेश्वर या तो पुरूस्कार देते हैं या दण्ड। अन्तिम न्याय के दिन में, परमेश्वर धर्मियों को(मसीह में विश्वासियों को) को अनन्त जीवन देगें। लेकिन वह दुष्टों को (जिन्होंने मसीह पर विश्वास नहीं किया) अनन्त दण्ड देगें (मत्ती 25:31-46)। यह कहना सही नहीं होगा कि यह अनुच्छेद केवल *व्यवस्था* के बारे में बात करता है *सुसमाचार* के बारे में नहीं, क्योंकि अन्तिम न्याय के संबंध में पौलुस की शिक्षा सुसमाचार का ही एक भाग है!(रोमियों 2:16)! यह कहना भी गलत होगा कि अन्तिम न्याय के दिन विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के लिए मूसा की व्यवस्था को ही न्याय के लिए परमेश्वर का मानक माना जाएगा। व्यवस्था नहीं, <u>वरन् परमेश्वर के प्रकाशन में मनुष्य के काम (जिसमें परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन भी शामिल है) अन्तिम न्याय के मानक होगें।</u>

चौथा। परमेश्वर के अन्तिम न्याय में को कोई *पक्षपात* नहीं होगा। परमेश्वर यहूदियों का भी उसी मानक से न्याय करेगें जिससे वे गैर यहूदियों का न्याय करेगें। जब कहा गया, "पहले यहूदी और फिर अन्यजातियां" (रोमियों 2:10) तो उसका मतलब यह नहीं था कि परमेश्वर यहूदियों के साथ अन्यजातियों की तुलना में अधिक उदारता के साथ व्यवहार करेगें। परमेश्वर यहूदियों और यूनानियों दोनों का ही परमेश्वर है (रोमियों 3:29)। परमेश्वर कोई पक्षपात नहीं करते (रोमियों 2:11)। और परमेश्वर निश्चय तौर पर यहूदियों का उसी पैमाने या मानक द्वारा न्याय करेगा जिससे वह गैर यहूदियों का न्याय करेगा। क्योंकि ऐतिहासिक क्रम को देखा जाए तो यहूदियों के पास पहले सुसमाचार पहुंचा था इसलिए, न्याय की शुरूआत भी यहूदियों से ही होगी। यहूदियों का न्याय पहले होगा। यदि वे मसीह पर विश्वास करने वाले हुए तो उन्हें सबसे पहले धर्मी ठहराया व पुरूस्कार दिया जाएगा (रोमियों 1:16; 2:10)। लेकिन अगर वे अविश्वासी हैं तो, तो उन्हें ही सबसे पहले दोषी ठहराकर दण्ड दिया जाएगा (रोमियों 2:9)।

पाँचवा। परमेश्वर का न्याय *पूरी तरह से उचित* होगा। <u>परमेश्वर लोगों का न्याय इस आधार पर होगा कि वे परमेश्वर और उसकी इच्छा को कितना जानते हैं।</u> संसार में दो प्रकार के लोग होते हैं: "वे लोग जो <u>व्यवस्था से मुक्त</u> हैं" और वे लोग "जो <u>व्यवस्था के अधीन</u> हैं" (रोमियों 3:19)। लेकिन क्योंकि "परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था" अन्यजातियों के हृदय में भी लिखी गयी है (रोमियों 2:14-15), इन दोनों समूह में से एक उन लोगों को दर्शाता है जो *परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से बाहर हैं* और दूसरा समूह उसके अनुग्रह के अधीन रहने वाले लोगों को दर्शाता है।

परमेश्वर के अन्तिम न्याय के पांच मानक <u>प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर यहूदियों के साथ किसी अन्य जाति की तुलना में पक्षपात नहीं करते!</u> यहूदियों में कोई प्रतिरक्षा नहीं पायी जाती। यहूदियों को कुछ सौभाग्य प्राप्त हैं (रोमियों 9:4-5), लेकिन वे किसी भी तरह से अन्तिम न्याय से बचे हुए नहीं हैं।

<u>कदम 3. प्रश्न।</u> **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 2:1-16 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

2:6

<u>प्रश्न1.</u> **<u>सारे लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा न्याय करने का मानक क्या है, जिसमें सारे धर्मी लोग भी शामिल हैं?</u>**

ध्यान दें। संसार की सारी जातियों के लोगों को यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि कोई भी जन अपने धार्मिक कामों की वजह से उद्धार नहीं पाएगा, लेकिन हर एक जन का न्याय उसके कामों के अनुसार होगा! वास्तव में देखा जाए तो सारे लोग दोषी हैं (यूहन्ना 3:18)। वरन् दूसरे धर्मों का अनुसरण करने वाले लोग भी दोषी हैं! क्योंकि वे परमेश्वर की नज़रों में धर्मी नहीं हैं, इसलिए वे पहले ही अनन्त मृत्यु के लिए दोषी ठहराये जा चुके हैं।

2:7-11

<u>प्रश्न 2.</u> **<u>भले और बुरे काम करने वाले लोगों के लिए परमेश्वर के न्याय का मानक क्या है?</u>**

ध्यान दें।

(1) कोई भी जन अपने भले कामों की वजह से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा।

आप रोमियों 2:6-8 को रोमियों 3:22,24 के साथ किस प्रकार मिला कर देखते हैं? रोमियों 3:20,22-24 कहता है: कोई भी जन अपने कामों के आधार पर धर्मी नहीं ठहरेगा। धार्मिकता निम्न चिजों के द्वारा प्राप्त होती है:

- परमेश्वर के अनुग्रह से

- उद्धार के निमित्त मसीह द्वारा पूरा किये गये काम से
- मसीह में किसी भी जन के विश्वास के द्वारा।

लेकिन कई लोग विश्वास करते हैं कि रोमियों 2:6-8 इसका उल्टा कह रहा है: "परमेश्वर हर एक जन को उसके कामों के हिसाब से प्रतिफल देगा: जिन लोगों ने भलाई की है उनके लिए अनन्त जीवन और गुस्सा और क्रोध उन लोगों के लिए जिन्होंने दुष्टता की है।"

इस अनुच्छेद में पौलुस दो बातें कहता है:

पहला। व्यवस्था उद्धार(धर्मी ठहराये जाने के लिए) के निमित्त परमेश्वर की धार्मिक मांग है। परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता मांग करती है कि संसार के सारे लोग परमेश्वर के समान पूरी तरह से पवित्र और धार्मिक हों और उनके सारे पापों को दण्ड उन्हें दिया जाए। रोमियों 2:6-8 में पौलुस धर्मी ठहराये जाने के तरीके के बारे में नहीं, वरन् धार्मिकता के मानक के बारे में शिक्षा देता है जो सारे लोगों पर लागू होगा जो धर्मी ठहराये जाने के लिए व्यवस्था पर भरोसा रखते हैं। यदि लोगों को अपने धर्मी ठहराये जाने के लिए अपने कामों (व्यवस्था के पालन करने) पर भरोसा है, तो उन्हें कुछ अंश को नहीं वरन् व्यवस्था की सारी बातों को मानना चाहिए (रोमियों 2:13; लैव्यवस्था 18:5 ;यहेजकेल 20:11)। उन्हें या तो सम्पूर्ण अर्थात शतप्रतिशत व्यवस्था का पालन करना चाहिए या फिर, वे परमेश्वर की ओर से "शापित" ठहरे(गलातियों 3:10-11)। यहां तक कि अगर उनसे किसी एक मांग को पूरा करने में चूक हो जाती है तो वे सम्पूर्ण व्यवस्था को तोड़ने के दोषी ठहरते हैं (याकूब 2:10)।

रोमियों 3:10-24 में पौलुस बताता है कि संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो इस तरह से व्यवस्था का पालन करता हो जो उसे बचा सके अर्थात उसे उद्धार दिला सके। सुसमाचार वह खुशखबरी है कि परमेश्वर ने बिना व्यवस्था के कामों के धर्मी ठहराने अर्थात उद्धार दिलाने की अनन्त योजना तैयार की है। एक तरफ *व्यवस्था* सभी लोगों को परमेश्वर की सिद्ध मांगों में रहित होने के कारण दोषी ठहराती है, *सुसमाचार* बताता है कि यीशु मसीह किस प्रकार पापी लोगों को उद्धार प्रदान करता है। *व्यवस्था* स्पष्ट बताती है कि लोगों को एक उद्धारकर्ता की जरूरत है, *सुसमाचार* उद्धार के बारे में बताता है।

दूसरा। अन्तिम न्याय के लिए व्यवस्था परमेश्वर का धर्मी मानक या पैमाना है। उद्धार के सन्दर्भ में व्यवस्था हर एक जन को केवल दोषी और भटका हुआ ही ठहरा सकती है। लेकिन अन्तिम न्याय के सन्दर्भ में व्यवस्था एक मानक या पैमाने के रूप में काम करती है जिसके द्वारा अविश्वासी और दुष्ट लोग दोषी ठहरेगें और इसी मानक के द्वारा अविश्वासियों को दण्ड तथा विश्वासियों को पुरूस्कार दिया जाएगा। एक व्यक्ति का उद्धार या दण्ड पृथ्वी पर बिताये जाने वाले जीवन में ही निर्धारित हो जाता है, लेकिन उसकी जीवनशैली और कामों हिसाब केवल मानव जाति के इतिहास के अन्त में ही लिया जाएगा। उसके बाद सारे लोगों को न्याय उनके अच्छे और बुरे कामों के आधार पर होगा (सभोपदेशक 12:14; 2कुरिन्थियों 5:10 ; इफिसियों 6:8)।

परमेश्वर खुले आम धर्मियों को सदा काल के लिए उद्धार पाये हुए के रूप में घोषित करेगा और एक मसीही के रूप में किये गये उनके भले कामों के लिए उन्हें प्रतिफल प्रदान करेगा। लेकिन

परमेश्वर अधार्मिक (अविश्वासियों) को उनके अपवित्र, अधार्मिक और सिद्धता रहित कामों उन्हें दण्डाज्ञा देगा। वे निम्न कारणों दे दण्डित किये जाएगेंः

- उसके अविश्वास के कारण– क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)
- उनकी बुराईयों के कारण– उन्हें सत्य को अस्वीकार किया और बुराई को अपनाया (रोमियों 2:8)
- उनकी धार्मिकता में अभाव के कारण– उन्होने मसीह और अपने भाईयों के साथ ठीक नहीं किया (मत्ती 25:40–41,45)।

उन्हें अपने बुरे कामों का फल जैसा मिलना चाहिए वैसे ही उन्हें मिलेगा(लूका 12:47–48)।

अतः रोमियों 2:8 हमें बताता है कि लोगों का उनके बुरे कामों के द्वारा न्याय होगा और वे दण्डित रहरेगें। लेकिन रोमियों 2:7 हमें ऐसी शिक्षा नहीं देता कुछ लोग ऐसे भी होगें जो अपने भले कामों के कारण धर्मी ठहरेगें और बचाए जाएंगे।

तो फिर पौलुस ऐसा क्यों कहता है कि परमेश्वर उन लोगों को अनन्त जीवन देगा ,"जो प्रयत्न के साथ भलाई करते और अनश्वरता को खोज करते हैं"? मनुष्य और धार्मिक लोगों शायद यह विश्वास करते हों कि उनके भले काम उन्हें बचा सकते हैं!

यह पर पहला प्रश्न यह है किः "परमेश्वर की नज़रों में "अच्छा" क्या है"? 7पद में "अच्छा क्या है" निश्चय तौर पर पद 9 कें "बुरा क्या है" का उल्टा होगा। इसलिए "अच्छा क्या है" को निम्न बातों द्वारा परिभाषित किया जा सकता हैः

- सत्य को स्वीकार करके (ध्यान देः सत्य यीशु मसीह है(यूहन्ना 14:6), बाइबल है(यूहन्ना 17:17), यीशु मसीह की शिक्षा है (यूहन्ना 8:31–32) और उद्धार के कामों को पूरा करने की सच्चाई (यूहन्ना 1:17)
- जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है उसका अनुसरण करकेः बाइबल का परमेश्वर व उसकी धार्मिकता (मरकुस10:18)
- और महिमा(परमेश्वर का स्वभाव), आदर (परमेश्वर की स्वीकृति), अनश्वरता (परमेश्वर का जीवन) और शान्ति (परमेश्वर की परिपूर्णता)।

"बुराई" को "सत्य को अस्वीकार करने", "परमेश्वर की दृष्टि में बुरे गिन जाने वाले कामों को करने" "परमेश्वर का स्वभाव,परमेश्वर के मंजूरी, परमेश्वर का जीवन या परमेश्वर की परिपूर्णता को हासिल न करने के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है।

और यहां पर दूसरा प्रश्न यह हैः"क्या यीशु के अलावा किसी के लिए भी भलाई करना(बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में) सम्भव है? उत्तर हैः नहीं! "बिना मेरे (यीशु मसीह) तुम कुछ भी नहीं कर सकते (इसकी अनन्त कीमत है) (यूहन्ना15:5)!

(2) जो वास्तव में "सुकर्म" करते हैं वे सुकर्म करने में स्थिर रहते हैं (रोमियों 2:7)

मत्ती 24:13 में लिखा है,"परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।" यह वचन मसीहियों की दृढ़ता और स्थिरता के बारे में बताता है (कुलुस्सियों 1:22-23; इब्रानियों 3:14)। रोमियों2:7 दो विचारों को मिलाता हैः एक मसीही सुकर्म करने में स्थिर रहता है और एक मसीही आशा करता या मज़बूत अपेक्षा करता है, जिसका अर्थ है कि, वह अन्त में प्रगट होने वाली एक सच्चाई की अपेक्षा करता है (जो अनन्त उद्धार है जिसमें महिमा,आदर, अमरता और शान्ति शामिल है)। "सुकर्मों" को "उद्धार" से जोड़ने के द्वारा पौलुस, जोर डालता है कि इन्हें कभी अलग नहीं किया जा सकता। यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त उद्धार के बिना सुकर्म मृतक हैं। बिना सुकर्मों के यीशु द्वार उद्धार पाना एक कल्पना मात्र है।

(3) जो लोग "सुकर्म" करते हैं

वे भविष्य में मसीहियों के साथ होने वाली वास्तविकता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं (रोमियों 2:7)।

ये लोग "अनन्त जीवन" की खोज(पाने की चाह, उसके लिए संघर्ष) करते हैं। शब्दावली "महिमा, आदर, अमरता, और शान्ति" स्वभाव, कीमत, भरोसे और अनन्त जीवन की आशीषों को प्रगट करती हैं(रोमियों 2:7,10)।

महिमा। "महिमा" शब्द (ग्रीकः डोक्सा) परमेश्वर के स्वभाव में भागीदार होने को प्रगट करता है (2पतरस 1:14)। "महिमा" मसीहियों की आगामी अपेक्षा को प्रगट करता है, जिसे मसीह के दूसरे आगमन पर सभी चीजों का रूपान्तरण होना कहा जाता है (रोमियों 5:2; 8:17)। जब मसीह में विश्वास करने वाले मरकर यीशु को आमने सामने देखगें (फिलिप्पियों 1:23) तो उनकी आत्मा रूपान्तरित हो जाएगी जिससे उनका पूरा व्यक्तित्व यीशु मसीह की समानता में बदल जाएगा और वे भी परमेश्वर की महिमा प्रगट करने लगेगें(रोमियों 8:17, 18,21,29,30; 9:23; 1कुरिन्थियों 2:7; 2 कुरिन्थियों 4:17; कुलुस्सियों 3:4; 1यूहन्ना 3:1-3)। और यीशु मसीह के आने पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों की अनश्वर देह जी उठेगीं और रूपान्तरित होकर स्वयं यीशु मसीह की महिमित देह के समान हो जाएंगी (1कुरिन्थियों 15:43; फिलिप्पियों 3:21)। उस समय पर सम्पूर्ण धरती हिलाई जाएगी और आग के द्वारा शुद्ध की जाएगी और परिवर्तित होकर नयी धरती बन जाएगी (रोमियों 8:21)।

आदर। "आदर" शब्द (ग्रीकः समय) यीशु मसीह में विश्वास करने वाले विश्वासियों को परमेश्वर की मंजूरी मिलने को दर्शाता है जो विशेष तौर पर मसीह के दूसरे आगमन पर ईश्वरहीन और दुष्ट लोगों को अस्वीकृत और निन्दित किये जाने का विपरीत है। (मत्ती 25:21; इब्रानियों 2:7; 1पतरस1:7; 2पतरस 1:17; प्रकाशितवाक्य 4:9,11; 5:12-13)।

अमरता। "अमरता" शब्द (ग्रीक : अफ्तारसिया) परमेश्वर के जीवन, मृतकों में से जी उठने के बाद के अनश्वर स्वभाव को साझा करने को दर्शाता है (1कुरिन्थियों 15:42)। यह मसीह के आगमन पर मसीहियों के जी उठने की *आशा* को प्रगट करता है(रोमियों 8:23; 1कुरिन्थियों 15:42-54; 2 कुरिन्थियों 5:4 ; 1पतरस 1:4)।

शान्ति। "शान्ति" शब्द (ग्रीक :इयरीनी) <u>परमेश्वर की सम्पूर्णता</u>, परेशानियों और नयी धरती पर दुःख की पूरी तरह अनुपस्थिति को प्रगट करता है(प्रकाशितवाक्य 21:4)। यह केवल धरती पर पाये जाने वाले देशों के बीच शान्ति को ही नहीं, वरन् आन्तरिक शान्ति, अर्थात *परमेश्वर के साथ मेल मिलाप* (यशायाह 26:3-4; रोमियों 5:1), हर एक जाति के मसीहियों के बीच मेल मिलाप (इफिसियों2:14-15), और पूरे आनन्द के साथ परमेश्वर की *अनन्तता में हृदय और मन की शान्ति* को प्रगट करता है (फिलिप्पियों 4:7; प्रकाशितवाक्य 21:4)।

<u>महिमा, आदर, अमरता और शान्ति या मेल मिलाप की आकांक्षाएं मसीहियों की अपेक्षाएं या आकाक्षाएं हैं, गैर-मसीहियों की नहीं!</u> केवल मसीही जन ही इस प्रकार की आकाक्षां और अपेक्षा कर सकता है। केवल मसीही लोग ही ऐसी आशा कर सकते हैं!

लेकिन जो लोग केवल अपनी ही बढ़ाई चाहते, सत्य को अस्वीकार करते और बुराई का अनुसरण करते हैं उनके लिए परमेश्वर का गुस्सा और क्रोध तथा नरक में परेशानी और दुःख रखा हुआ है (रोमियों 2:8-9)। वे नाश हो जाएंगें (रोमियों 2:12)।

दूसरे धर्मों के अविश्वासी और विश्वासियों में ये अपेक्षाएं और आकांक्षाएं नहीं होगींः वे नये जन्म और रूपान्तरण (यूहन्ना 3:3) या मृतकों में से जी उठने (1कुरिन्थियों 15:19) पर विश्वास नहीं करते। वे बाइबल के परमेश्वर से मंजूरी प्राप्त करनी खोज नहीं करते और नहीं उसके साथ मेल मिलाप करते हैं। परमेश्वर की व्यवस्था की मांग उनमें पूरी नहीं होती है (रोमियों 8:4; यूहन्ना 10:11को देखें)। और वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते, बल्कि अपने ही पापमय स्वभाव में जीवन व्यतीत करते हैं (रोमियों 8:4; 1कुरिन्थियों 12:3)।

अतः जो लोग लगन के साथ महिमा, आदर, अमरता और शान्ति की खोज करत हैं वे मसीही होते हैं, गैर मसीही नहीं। वे अनन्त जीवन अपने भले कामों से प्राप्त नहीं करते, लेकिन उनके भले काम इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर ने उन्हें अनन्त जीवन प्रदान किया है (लूका 3:8; यूहन्ना 15:5,8)। वे अनन्त जीवन के अधिकारी हैं, इसीलिए उनके जीवन में सुकर्म करने की स्थिरता और आशाओं की अपेक्षाएं होती हैं।

(4) जो लोग भलाई करते हैं वे अपने कार्यों को बाइबल के परमेश्वर के अधीन करते हैं(रोमियों)।

किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी बढ़ाई खोजने की बजाय परमेश्वर के अधीन होना 'भला' है। गैर मसीहीयों द्वारा कही जाने वाली शिक्षाओं द्वारा बाइबल की शिक्षाओं को अस्वीकार करने, दबाने या बदलने की बजाय उस सत्य पर विश्वास करना और उसे स्वीकार करना "भला" है (रोमियों 1:18,25)।

(5) जो लोग "भले काम" करते हैं उनके काम बाइबल में प्रगट शिक्षाओं पर आधारित होते हैं (रोमियों 2:8)।

हालांकि परमेश्वर के विशेष प्रकाशन अर्थात पुराने नियम में प्रगट किया गया प्रकाशन परमेश्वर की सृष्टि में प्रगट किये गये प्रकाशन से बढ़कर है (रोमियों 1:18),यहूदियों और यूनानियों के बीच दुष्टों में एक ही बात समान है कि वे दोनो ही सत्य को अस्वीकार कर देते हैं। "सत्य" स्वयं प्रभु यीशु मसीह (यूहन्ना 14:6), मसीह यीशु की शिक्षा (यूहन्ना 8:31-32) वास्तविकता अर्थात यीशु मसीह द्वारा स्थापित किया गया उद्धार (बजाय उसकी छाया के) और प्रभु के वचन (बाइबल में) है (यूहन्ना 17:17)।

यह स्पष्ट है कि "7 पद में पाये जाने वाले भले कार्य वे काम नहीं है जो "आम लोगों की नज़रों में अच्छे हैं", परन्तु ये ऐसे काम हैं जो "परमेश्वर की दृष्टि में भले हैं", क्योंकि वे काम पूरी तरह से सत्य पर अर्थात परमेश्वर के प्रगट प्रकाशन पर आधारित है जो मसीह और बाइबल में पाये जाते हैं। सत्य सुसमाचार और वही मसीही विश्वास और अभ्यास की वे शिक्षाएं हैं जो बाइबल में सिखाई जाती हैं। भले कामों में यीशु मसीह में विश्वास शामिल होना चाहिए(यूहन्ना 6:28-29)!

बाइबल स्पष्ट रूप से बताई है कि बिना यीशु मसीह के परमेश्वर की दृष्टि में "भले काम" करना नामुमकिन है। यूहन्ना 14:6 में लिखा है कि सारे संसार या इतिहास में कोई भी जन बिना यीशु मसीह के पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता। प्रेरितो ंके काम 4:12 में लिखा है कि आकाश के नीचे और धरती के ऊपर कोई भी ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा मनुष्य उद्धार पा सके। और यूहन्ना 15:5 हमें सिखाता है कि यीशु मसीह के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है, इसका अर्थ है कि वह कोई भला कार्य या कोई ऐसा काम नहीं कर सकता है जिसकी परमेश्वर की दृष्टि में कोई कीमत है।

परमेश्वर न्याय के दिन में किसी का पक्षपात नहीं करते हैं। न तो व्यवस्था और न ही सुसमाचार उसके अन्तिम न्याय का मानका होगा, वरन मनुष्य के कामों के अनुसार ही उसका न्याय होगा! मनुष्य का न्याय उसके द्वारा जीवन बिताये गये तरीके, उसके कामों के आधार पर और इस आधार पर होगा कि उसने सुसमाचार के कम या ज्यादा ज्ञान के साथ किन कामों को करने से नज़रअंदाज किया। परमेश्वर यहूदिया का भी न्याय उसी पैमाने से करेगा जिससे वह अन्यजातियों को न्याय करेगा।

निष्कर्ष। 'भलाई' करने वाले लोग ही केवल यीशु मसीह में विश्वास करने वाले हो सकते हैं। केवल मसीही लोग ही वे काम करते हैं जो बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे होते हैं। जो भला काम वे करते हैं वह यह है कि वे सबसे ऊपर बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचते हैं जो बाइबल के परमेश्वरे की दृष्टि में भला है (मत्ती 6:33)। जो काम वे करते हैं वे मनुष्यों की दृष्टि में या अपनी व्यक्तिगत धार्मिकता के निमित्त भले काम नहीं है, परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्होंने यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार किया है और उसके साथ साथ उन्होंने धार्मिकता कमाई है(मत्ती 10:18; यूहन्ना 6:28-29)। इसलिए "अनन्त जीवन" न तो विश्वासी के द्वारा कमाया जाता है और न ही वे उसके हकदार हैं, परन्तु उन्हें वह यीशु मसीह के द्वारा दिया गया है। अन्य धर्मों के अविश्वासी या विश्वासी केवल अपने कामों के आधार पर मुक्ति नहीं पा सकते, क्योंकि उनके भले कामों का आधार बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं पर आधारित नहीं है। उनके भले काम उनके अपने विचारों या उनके धार्मिक गुरूओं (बाबाओं, पुजारियों,

स्वामियों, गुरूओं, पासबानों और मुल्लाओं इत्यादि) की बातों पर आधारित होते हैं। मनुष्यों की दृष्टि में दिखने वाले ये भले काम परमेश्वर के मांग या उसकी सिद्धता के सामने कम पड़ते हैं।

2:12क, 14-15

<u>प्रश्न 3. अन्यजातियों का न्यान करने के लिए परमेश्वर का मानक क्या है?</u>

(1) अन्यजातियां परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से बाहर हैं,

और उन्होंने सुसमाचार नहीं सुना है।

ध्यान दें। रोमियों 2:12ख में लिखा है, "जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नष्ट भी हो जाएंगे"।

रोमियों 2:14 और 15 में न्याय के दिन अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के न्याय के मानक का विस्तार पूर्वक वर्ण करते हैं। यह वर्णन एक प्रश्न का उत्तर है, " यदि अन्यजातियों ने व्यवस्था को सुना ही नहीं है तो अन्यजातियों को "पापी" कैसे कहा जा सकता है?" जिसका जवाब यह है कि हालांकि अन्यजातियों को पास लिखित व्यवस्था नहीं है(अर्थात पुराने और नये नियम का प्रकाशन),लेकिन वे अपने मन और विवेक में लिखी हुई व्यवस्था के अनुसार काम करते हैं और वह उन्हें दोषी ठहराती है। अन्यजातियां दो बातों से साबित करती हैं कि उनके पास परमेश्वर का नैतिक ज्ञान है।

(2) अन्यजातियां स्वाभाविक तौर पर ही परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा कर देते हैं।

उदारहरण के तौर पर, अन्यजातियां व्यवस्था में ठहरायी गयी रीतियों का पालन करते, विवाह करते और बच्चे जनते हैं, वे लोगों की सहायता करते और स्वभाविक प्रेम दिखात हैं, वे गरीबों और बीमारों की देखभाल करते हैं, और अनेको धार्मिक काम करते जिन्हें परमेश्वर की प्रगट व्यवस्था के आधार पर करना जरूरी है।

वे "स्वभाव से" ही इन बातों को करते हैं, इसका मतलब है कि, उनके भीतर कोई अलग स्वाभाविक रूची उत्पन्न होती है, जो उन्हें कुछ काम करने के लिए मजबूर करती हैं। यह तथ्य कि अन्यजातियां स्वभाव ही से व्यवस्था के कामों को पूरा करते हैं, इस बात को साबित करता है कि, "वे अपने आप के लिए स्वयं व्यवस्था हैं", अर्थात वे खुद ऐसे नियमों की पुस्तक हैं जो अपने लिए परमेश्वर की व्यवस्था को प्रगट करते हैं। उनके कई काम इस बात को प्रगट करते हैं कि परमेश्वर के नैतिक नियमों की मांग उनके मानवीय स्वभाव के विधान में लिखें हुए हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि ये "व्यवस्था"(जिसके अन्तर्गत आदि से ही सारी मांगें उनके स्वाभाविक विधान में लिखी हुई हैं) परमेश्वर की उस व्यवस्था से अलग नहीं है जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के द्वारा यहूदियों पर प्रगट किया था।

(3) अन्याजियों का विवेक, व्यवस्था की मांगों के उस ज्ञान के आधार पर कार्य करता है

जो उनके हृदयों पर लिखी हुई है।

"विवेक" मनुष्य की आत्मा का एक काम है और किस भी विषय या वस्तु में भेद परखता और न्याय करता है। विवेक एक भीतरी न्यायी या भीतरी दर्पण के समान कार्य करता है, और वह चाहता है कि मानव उन्हीं कामों को करे जो उनके हृदय पर लिखी व्यवस्था मांग करती है। मनुष्य के विवेक के विचार कई बार दोष लगाते हैं और कई बार वह मनुष्य के आचरण को निर्दोष ठहराते हैं।

(4) अन्यजातियों में के जो लोग बिना व्यवस्था (अर्थात, परमेश्वर के विशेष प्रकाशन) के पाप करते हैं, वे परमेश्वर की व्यवस्था(परमेश्वर के विशेष प्रकाशन) के बिना ही दण्ड पाएगे।

अन्यजातियों, में से जिन लोगों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के बारे में नहीं सुना है, वे निर्दोष होने की गुहार नहीं लगा सकते, क्योंकि परमेश्वर के ज्ञान की सामान्य व्यवस्था अर्थात नियम उनके हृदयों में लिखे हुए हैं। उनका विवेक उनमें एक वकील के समान का करता और व्यवस्था को पूरा न करने पर उन्हें दोषी और व्यवस्था का पालन करने पर उनका बचाव करता है।

इसके अलावा सभी अन्यजातियों में से लोगों ने पाप किया और है और वे परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये हैं(रोमियों 3:10-12,23)। उनके पाप के कारण वे परमेश्वर की नज़रों में दोषी हैं और परमेश्वर उनका न्याय करेगें और उन्हें दण्ड भी देगें। लेकिन अन्यातियों के परमेश्वर द्वारा प्रगट विशेष प्रकाशन से अनजान होने के कारण, परमेश्वर उनका न्याय अपने सामान्य प्रकाशन के आधार पर ही करेगेंः अर्थात परमेश्वर के बारे में उनके ज्ञान (जो आदि से ही संचालन करता है) और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के ज्ञान (जो उनके हृदयों पर लिखी व्यवस्था अनुसार उनका संचालन करता है)। और परमेश्वर उनका न्याय उनके उन कामों का आधार पर करेगें जो उन्होंने परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के प्रकाश में किये हैं, जो उनमें पाये जाते हैं। उनका न्याय किसी भी ऐसी व्यवस्था के आधार पर नहीं होगा जिससे वे अनजान हों।

सदोम, अमोरा, सिदोन और सोर जैसे दृष्ट और ईश्वर रहित लोगों के पास नए या पुराने नियम का प्रकाशन नहीं थी। इसलिए अंतिम न्याय का दिन उनके लिए यीशु मसीह के समय के यहूदियों की अपेक्षा अधिक सहने के योग्य होगा क्योंकि उनके पास पुराने नियम का प्रकाशन (व्यवस्था) था और उन्होंने नए नियम का सुमाचार भी सुना था (मत्ती 10:15; 11:20-24)।

अन्यजातियों का *न्याय* परमेश्वर के विशेष प्रकाशन (पुराने नियम की व्यवस्था और नए नियम के सुसमाचार) से अलग किया जाएगा, लेकिन वे परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से अलग *नाश* भी होंगे! परमेश्वर ने स्वर्ग और नरक के बारे में जो आपने विशेष प्रकाशन में प्रकट किया वह अन्यजातियों पर लागू नहीं किया गया क्योंकि उनके पास परमेश्वर का विशेष प्रकाशन नहीं है। अन्यजतियों के विषय में हम केवल इतना कह सकते हैं कि परमेश्वर उनका न्याय सटिकता और निष्पक्षता के साथ करेगा। "जो दास अपने स्वामी की इच्छा जानता था और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, वह बहुत मार खाएगा। परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा। इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा" (लूका 12:47-48)। इस प्रकार, परमेश्वर का अंतिम न्याय (दंड) मनुष्य के पापों से अनुसार होगा!

परमेश्वर मसीहियों से मांग करता है कि उनकी दया उनके बलिदानों से बढ़कर हो। यीशु कहता है, "मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ। क्योंकि मैं धार्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।" (मत्ती 9:13)। सभी पापियों को परमेश्वर की दया की आवश्यकता है। इस प्रकार हम परमेश्वर से निम्नलिखत अपेक्षा कर सकते हैं: "परमेश्वर की दया न्याय पर जयवंत होती है" (याकूब 2:13)! कैसे, हम पर प्रकट नहीं किया गया!

2:12ख,13

प्रश्न 4. **यहूदियों का न्याय करने के लिए परमेश्वर का मापदंड क्या है?**

ध्यान दें।

(1) **यहूदी परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के *अंर्तगत* थे,**

लेकिन उन्होंने उसके विशेष प्रकाशन को अस्वीकार कर दिया।

(2) **वे यहूदी जिन्होंने व्यवस्था (परमेश्वर का विशेष प्रकाशन) की अधीनता में पाप किया उनका न्याय व्यवस्था (परमेश्वर का विशेष प्रकाशन) के अनुसार किया जाएगा।**

रोमियों 2:12ख कहता है, "जिन्होंने व्यवस्था पाकर (शाब्दिक रूप से: व्यवस्था में रह कर) पाप किया, उनका दंड व्यवस्था के अनुसार होगा।" पौलुस के समय में, यहूदी व्यवस्था (शाब्दिक रूप से: व्यवस्था में) के अधीन थे (यह पुराने नियम में परमेश्वर का विशेष प्रकाशन था)। उनमें से अधिकांश ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (नए नियम में परमेश्वर का विशेष प्रकाशन)। उस समय अन्यजातियों की अधिकता के विपरीत, यहूदियों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की पूर्ण जानकारी होते हुए भी पाप किया। यहूदियों का न्याय परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के अनुसार किया जाएगा और इसका अर्थ है न्याय के निम्नलिखित तीन मापदंडो के अनुसार:

- उनके काम (जीवन, कर्म, व्यवहार) *परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन* की ज्योति (सृष्ठि में, हृदय और स्वभाविक मनुष्य का विवेक) में उनका न्याय करेंगे।
- उनके काम पुराने नियम में *परमेश्वर के विशेष प्रकाशन* की ज्योति में (व्यवस्था में और भविष्द्धक्ताओं में) उनका न्याय करेंगे। वे पुराने नियम में परमेश्वर की व्यवस्था के अपराध में निश्चित रूप से दोषी ठहराए जाएंगे।
- और यदि उन्होंने सुसमाचार सुना और उसे अस्वीकार किया, उनका न्याय उनके कामों के द्वारा भी किया जाएगा (जीवन, कर्म, व्यवहार) *नए नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन* की ज्योति में (सुसमाचार में जिसे उन्होंने अस्वीकार किया)। निश्चित रूप से वे अपने अविश्वास के लिए दोषी ठहराए जाएंगे (यूहन्ना 3:18,36; 2थिस्सलुनीकियों 1:8-9; इब्रानियों 4:2), परमेश्वर जो चाहता था उसे अनदेखा करने के लिए (मत्ती 25:41-46)

और उनके बहुत से पापों के लिए जो क्षमा नहीं किए गए (मत्ती 6:14; यूहन्ना 9:41; इब्रानियों 4:6)।

यहूदियों के साथ उनके पाप की प्रकृति और उनके दंड के बीच एक सटीक समानता होगी। लेकिन क्योंकि उनके पास अन्यजातियों की अपेक्षा परमेश्वर के ज्ञान और इच्छा की अधिक जानकारी थी, उनका अंतिम न्याय पाप के प्रति उनके आकर्षण के अनुसार होगा (लूका 12:47-48)।

(3) न्याय का मापदंड केवल सत्य का ज्ञान नहीं होगा, लेकिन परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के सत्य की अज्ञाकारिता भी होगा।

बहुत से यहूदियों ने सोचा कि केवल परमेश्वर की पवित्र पुस्तक (पुराने नियम के वचन, थोरा) का ज्ञान और अधिकार उन्हें धर्मी ठहराएगा। पवित्र पुस्तक को उनके बीच चूमा, आदर, संभाला, चर्चा, बहस और प्रचार किया जाता था। हर सब्त के दिन आरधनालय में वह पुस्तक पढ़ी जाती और वे सुनते थे। फिर भी जो उन्होंने सुना उस पर विश्वास नहीं किया (इब्रानियों 4:2) और जो उन्होंने सुना उसके अनुसार नहीं किया (इब्रानियों 4:6)! समान्यत यहूदियों ने पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण पहलू को अनदेखा कर दिया- उन्होंने उसके विषय पर विश्वास नहीं किया न ही उसका पालन किया! वे उसकी शिक्षाओं के अनुसार नहीं जीए! यीशु ने फरीसियों को दोषी ठहराया क्योंकि जो वे प्रचार करते थे उसे वे स्वयं नहीं करते थे (मत्ती 23:3)। यहूदियों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया जाएगा (जीवन, कर्म, व्यवहार) केवल उनके ज्ञान के अनुसार नहीं।

जब पौलुस कहता है, ''परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे" (रोमियों 2:13), उसका अर्थ यह नहीं कि यहूदियों या किसी और को व्यवस्था का पालन करने के लिए धर्मी ठहराया जाएगा। वह यह नहीं मानता कि अंतिम न्याय के दिन लोगों के कामों को केवल एक पैमाने पर तौला जाएगा और लोगों को व्यवस्था का पालन करने के कारण धर्मी घोषित किया जाएगा। बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है, ''इसलिए की व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी (यूनानीः कोई भी शरीर, कोई भी मनुष्य) धर्मी नहीं ठहरेगा" (गलातियों 2:16; रोमियों 3:28)! पौलुस का अर्थ यह है कि <u>अंतिम न्याय के दिन न्याय का मापदंड यह नहीं होगा कि किसी ने पुराने नियम के विषय में कितना सुना है या जानता है, लेकिन उसने पुराने नियम के अनुसार अपने जीवन को कैसे जीया!</u> व्यवस्था धर्मी ठहराने का माध्यम या मापदंड नहीं है, लेकिन यह न्याय का मापदंड है!

(4) उद्धार (धर्मी ठहरने) के लिए परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता

व्यवस्था का सिद्ध (100प्रतिशत) पालन करने से कम नहीं है।

रोमियों 2:13 कहता है, ''परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे।" बाइबल यह नहीं सिखाती की परमेश्वर लोगों को व्यवस्था का पालन करने के लिए धर्मी (उद्धार) ठहराएगा, लेकिन यह अवश्य सिखाती है कि परमेश्वर लोगों का न्याय उस व्यवस्था के अनुसार करेगा जो उनके पास है। परमेश्वर की व्यवस्था (विशेष प्रकाशन) लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहती है, ''जो मनुष्य उनको मानें (परमेश्वर के नियम और व्यवस्था) वह उनके कारण जीवित रहेगा"। पुरान नियम (लैव्यव्यवस्था18:5; यहेजकेल 20:11) और नया नियम

(रोमियों 2:7; 10:5; गलातियों 3:12) दोनों ही यह सिखाते हैं कि यदि कोई मनुष्य परमेश्वर के नियमों और व्यवस्था को पूर्णरूप से (100प्रतिशत) पालन करे, तब वह परमेश्वर के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहराया जाएगा। हाँलाकि मनुष्य के पाप में गिरने के बाद व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहरना सम्भव न रहा!

(5) पृथ्वी पर या मानव इतिहास में कोई भी मनुष्य योग्य नहीं ठहरा,

क्योंकि कोई भी व्यवस्था का पालन पूर्ण रूप से (100प्रतिशत) नहीं कर सकता।

पुरान नियम (व्यवस्थाविवरण 27:26) और नया नियम (गलातियों 3:10; याकूब 2:10) दानों ही यह सिखाते हैं कि जो भी लोग व्यवस्था के द्वारा उद्धार पाना या धर्मी ठहरना चाहते हैं, वे व्यवस्था का सिद्धता से (100प्रतिशत) पालन करने के लिए मजबूर हैं। याकूब 2:10 कहता है, "जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है *परन्तु एक ही बात में* चूक जाए तो वह सब बतों में दोषी ठहर चुका।" और गलातियों 3:10 कहता है, "इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई *बातों के करने में स्थिर* नहीं रहता, वह शापित है'।" जितने भी (मानववादी और धार्मिक) लोग व्यवस्था के कामों से धर्मी (उद्धार) ठरहना चाहते है (बिना इसे महसूस किए) वें सब परमेश्वर के शाप के अधीन हैं क्योंकि एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं (यीशु मसीह को छोड़कर) जिसने व्यवस्था को पूर्ण रूप से (100प्रतिशत) या सिद्धता से पूरा किया हो या पूरा कर सकता हो! रोमियों 3:10 सिखाता है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं!" कोई भी व्यवस्था के द्वारा धर्मी नहीं ठहरेगा या स्वर्ग लोक जाएगा![1]

निष्कर्ष। रोमियों 2:13 यह नहीं सिखाता कि कुछ लोगों होंगे जो व्यवस्था के कामों के कारण धर्मी ठहराए जाएंगे या उद्धार प्राप्त करेंगे।

2:12ख,13

प्रश्न 5. **मसीहियों के लिए परमेश्वर के न्याय का मापदंड क्या है?**

ध्यान दें।

(1) मसीही लोग परमेश्र के विशेष प्रकाशन के अनंद हैं

और उन्होंने सुसमाचार को स्वीकार किया है।

(2) जिन मसीही लोगों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की अधीनता में पाप

किया उनका न्याय परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के अनुसार होगा।

मसीही लोगों का न्याय भी परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन के अनुसार किया जाएगा और इसका अर्थ है अंतिम न्याय के दिन निम्नलिखित दो मापदंडो के अनुसारः

ईमानदार मसीहियों का न्याय उनके यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा किया जाएगा। मसीहियों को पहले ही परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने और उसके द्वारा उनके स्थान पर कमाई गई धार्मिकता के कारण धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है। मसीही कभी भी नरक की अनंत आग के भागी (नाष) नहीं होंगे (यूहन्ना 5:24, रोमियों 8:1), बल्कि अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर के द्वारा सार्वजनिक रूप से दोषमुक्त ठहराए गाएंगे (मत्ती 25:31-34)।

मसीही लोग मसीह के साथ नई पृथ्वी के वारिस होंगे, क्योंकि उनके नाम मेम्नें की जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं (प्रकाशितवाक्य 10:20; 20:15)। जो लोग यीशु मसीह पर और उसके पूरे किए गए उद्धार के कार्य पर ईमानदारी से विश्वास करते हैं उनके लिए वह (यीशु मसीह) प्रायश्चित बना। वह उनके भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल के पापों के लिए प्रायश्चित बना। इब्रानियों 8:12 में परमेश्वर कहते हैं, ''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावंत रहूँगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करूँगा।''

ईमानदार मसीहियों के कामों (जीवन, कर्म, व्यवहार) को बाइबल में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ज्योति में परखा जाएगा। <u>यह न्याय उनके उद्धार (धर्मी ठहरने) को नहीं वरन् उनके पुरस्कार को निर्धारित करेगा</u> (1कुरिन्थियों 3:12-15)। मसीहियों का न्याय इस आधार पर किया जाएगा कि उन्होंने अपना धर्मी जीवन (उद्धार पाया हुआ) किसी प्रकार जीया। उनके कामों (जीवन, कर्म, व्यवहार) को बाइबल की नैतिक व्यवस्था और बाइबल में यीशु मसीह की शिक्षा के आधार पर परखा जाएगा। उनके कामों को *उनके विश्वास की गुणवत्ता* और *उद्धार के फल को परखने के लिए जांचा जाएगा।* नाममात्र मसीही (जो केवल इसलिए ''मसीही'' हैं क्योंकि उनकी संस्कृति मसीही है) अपने अविश्वास के लिए (यूहन्ना 3:18,36; 2थिस्सलुनीकियों 1:8-9), परमेश्वर की दृष्टि में जो करना आवश्यक है उसे अनदेखा करने (मत्ती 25:41-46) और उनके बहुत से पापों के लिए जो क्षमा नहीं किए गए (मत्ती 6:14, यूहन्ना 9:41) निश्चित रूप से दोषी (नाष) ठहराए जाएंगे।

(3) मसीहियों को प्रभु यीशु मसीह पर उनके विश्वास और उस धार्मिकता के कारण धर्मी ठहराया गया है जो यीशु मसीह ने उनके स्थान पर उनके लिए प्राप्त की।

कोई भी मसीही व्यवस्था के कर्मों की आज्ञाकारिता या उसके तथाकथित धार्मिक कामों (सुसमाचारीय आज्ञाकारिता) से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा! उद्धार के लिए परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता व्यवस्था को पूर्ण रूप से (100 प्रतिशत) पूरा करने से कुछ कम नहीं है, जैसा कि एक व्यक्ति

---

[1] यहूदियों, मसीहियों और मुसलमानों के लिए इसके दूरगामी परिणाम हैं, जो व्यवस्था (थोरा, दस आज्ञाएँ और शरीयत) को बनाए रखने के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं!

(100 प्रतिशत) वैसे ही धर्मी और पवित्र है जैसे की परमेश्वर और उसके सारे पापों को पूर्णरूप से दंडित किया गया है (100 प्रतिशत) प्रायश्चित के सिद्ध बलिदान के द्वारा! यदि ऐसे मसीही होते जो

व्यवस्था का पालन पूर्णरूप से या सिद्धता से करते तो वे परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराए जाते। लेकिन कोई भी इसके योग्य नहीं, क्योंकि कोई भी व्यवस्था का पालन सिद्धता से नहीं कर सकता (रोमियों 3:10, 23; गलातियों 3:10; याकूब 2:10)।

हाँलाकि, मसीहियों को धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है, उनके अपने कामों (हमेशा अधूरे) के अनुसार नहीं, लेकिन *परमेश्वर के* द्वारा यीशु मसीह के मारे जाने, गाड़े जाने और फिर से जी उठने के उद्धार के (100 प्रतिशत) काम के *आधार पर।* उनके उद्धार का (धर्मी ठहरने) का आधार उनके काम नहीं है लेकिन वह है जो यीशु मसीह उनके लिए पहले ही कर चुका है! और मसीहियों ने धार्मिकता (उद्धार) को प्राप्त किया है (जो यीशु मसीह की सिद्ध और 100प्रतिशत पूर्ण धार्मिकता है) (1कुरिन्थियों 1:30) यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा। उनका विश्वास उनके उद्धार का आधार नहीं है वरन् वह माध्यम है जिसके द्वारा उन्होंने (100 प्रतिशत) सिद्ध और पूर्ण धार्मिकता प्राप्त की है जिसे मसीह ने कमाया है और परमेश्वर उसकी मांग करता है।

(4) न्याय का मापदण्ड केवल ऐतिहासिक विश्वास नहीं होगा,

लेकिन ऐसा विश्वास जो फलस्वरूप कामों को उत्पन्न करता है।

अंतिम न्याय के दिन मसीहियों के लिए न्याय का मापदंड यह नहीं होगा की उन्होंने नए या पुराने नियम के विषय में कितना अधिक सुना है या कितना अधिकत जानते हैं, लेकिन वे बाइबल के आधार पर किस प्रकार जीए।

(5) मसीहियों को यीशु मसीह की सिद्ध धार्मिकता के आधार पर

धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है।

मसीहियों को कभी भी ऐसे विश्वास के आधार पर धर्मी नहीं ठहराया जाएगा जो कि ऐतिहासिक विश्वास है, यह बाइबल के सत्य पर बिना आज्ञाकारिता के विश्वास करना है (विशेष काम जो उद्धार से संबंधित हैं) (याकूब 2:14-26)। परमेश्वर का अंतिम न्याय केवल विश्वास मात्र का सम्मान नहीं करेगा या केवल सारांश पर विश्वास करने वाले धर्मी नहीं ठहरेगें। वह विश्साव और धर्मी का सम्मान करेगा उस विश्वास के द्वारा जो सभी तत्वों के साथ संबंधित है और जिसमें धर्मी (उद्धार पाए) स्थिर हैं। उद्धार में, परमेश्वर का अनुग्रह शायद इस बात पर उस हद तक जोर न देता हो कि व्यवहारिक मसीही जीवन अलग है। <u>विश्वासियों को केवल बुराई और अधार्मिकता *से उद्धार* नहीं मिलता लेकिन हर प्रकार से पवित्र और धर्मी जीवन *के लिए उद्धार* मिलता है। उन्हें केवल एक व्यर्थ और खाली जीवन से उद्धार नहीं मिलता लेकिन एक अर्थपूर्ण और भले कामों में फलवंत जीवन *के लिए उद्धार* मिलता है।</u>

(6) मसीहियों को पुरस्कृत किया जाता है

मसीह की धार्मिकता के आधार पर।

मसीहियों को भी पुरस्कृत किया जाएगा, <u>उनके स्वयं के कामों के आधार पर नहीं</u> (जो हमेशा अधूरे हैं), लेकिन यीशु मसीह के द्वारा पूरे किए गए उद्धार के काम के आधार पर (जो हमेशा से

पूर्णरूप से सिद्ध है)। उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा उनके उन भले कामों के लिए नहीं जो उन्होंने किए, बल्कि केवल इस कारण से कि परमेश्वर यीशु मसीह में उनके प्रति अनुग्रहकारी रहा है।

हाँलाकि, उन्हें अपने स्वयं के कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। उनके भले काम इस बात का स्पष्ट प्रमाण होंगे कि वे उन लोगों में से है जिनका उद्धार परमेश्वर ने विश्वास के द्वारा अनुग्रह से किया है (इफिसियों 2:8-10)। उनके काम उनके पुरस्कार का मापदंड होंगे (मत्ती 25:20-21; 1कुरिन्थियों 3:14-15) और इसी प्रकार मसीहियों के मूल्यांकन के लिए परमेश्वर का मापदंड होग।

(7) अच्छे कामों के लिए परमेश्वर का मापदंड नैतिक व्यवस्था है।

कामों के लिए मापदंड दस आज्ञाएँ और बाइबल कि अन्य नैतिक शिक्षाएँ है। मसीहियों के लिए परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था कभी भी रद्द नहीं की गई। यद्पि मसीही "व्यवस्था के अधीन" नहीं रहें (रोमियों 6:14), फिर भी वे परमेश्वर व्यवस्था से स्वतंत्र नहीं, लेकिन "मसीह की व्यवस्था" के अधीन है (जैसे, परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना) (रोमियों 13:8-10; मरकुस 12:30-31; 1कुरिन्थियों 9:21)। बाइबल की नैतिक व्यवस्था धर्मी ठहरने के लिए माध्यम नहीं है, लेकिन यह दिशानिर्देश है कि मसीहियों को धर्मी ठहराए हुए लोग (मसीही) होने के नाते अपने जीवन को कैसे जीना चाहिए (निर्गमन 20:1-2)।

निष्कर्ष। जब पौलुस कहता है, "परमेश्वर सबको उनके कार्यों के अनुसार प्रतिफल देगा" (रोमियों 2:6), उसमें मसीही भी शामिल हैं। इसलिए विश्वास के द्वारा अनुग्रह से मिले उद्धार के *प्रमाण स्वरूप* मसीहियों के भले काम, मसीहियों का अंकलन करने के लिए परमेश्वर का मापदंड होंगे। बाइबल में उद्धार के सिंद्धात में मसीहियों के भले कामों का एक महत्वपूर्ण (अनिवार्य) स्थान है (मत्ती 5:16; गलातियों 6:9-10; इफिसियों 2:8-10; तीतुस 2:14)।

2:16

प्रश्न 6. **अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर लोगों का न्याय कैसे करेगा ?**

ध्यान दें।

अंतिम न्याय का दिन सुसमाचार की घोषणा करने का एक अनिवार्य भाग है। अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर हर एक व्यक्ति का न्याय करेंगे जो इस पृथ्वी पर रहे। वह यीशु मसीह के माध्यम से लोगों के रहस्यों का न्याय करेंगे, जैसा की उसका सुसमाचार घोषित करता है।

(1) लोगों का न्याय उनके सभी कार्यों के अनुसार आंका जाएगा।

केवल लोगों के बाहरी कामों के अनुसार नहीं, लेकिन लोगों के छिपे हुए गुप्त रहस्यों का भी न्याय किया जाएगा (सभोपदेशक 12:14)। यह विशेष रूप से उन अविश्वासी यहूदियों की ओर निर्देशित है जो *बाहरी व्यवहार को सुधारने* में विशिष्ट थे। रोमियों 2 अध्याय में, पौलुस बार बार यहूदी धारणा के दोष को उजागर करता है। वह यहूदियों की बाह्य कर्मकांडवाद की मूर्खता को भी उजागर करता है। परमेश्वर का न्याय सत्य के अनुसार होगा, अर्थात लोगों के वास्तविक विचार, उद्देश्य, दृष्टिकोण

और कार्यों के अनुसार। इसमें निश्चित रूप से सभी गुप्त और शर्मनाक कार्य शामिल होंगे (2कुरिन्थियों 4:2; इफिसियों 5:12)।

(2) लोगों का न्याय उस सुसमाचार के अनुसार किया जाएगा जिसकी घोषणा पौलुस ने की।

इसका अर्थ यह नहीं हो सकता की सुसमाचार परमेश्वर के न्याय का सार्वभौमिक मापदंड होगा।

व्यवस्था। पुराने नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के भाग के रूप में व्यवस्था परमेश्वर के सार्वभौमिक न्याय का मापदंड नहीं है (रोमियों 2:12)।

सुसमाचार। साथ ही सुसमाचार नए नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के एक भाग के रूप में परमेश्वर के सर्वभौमिक न्याय का मापदंड नहीं हो सकता।

कार्य। परमेश्वर के न्याय का सर्वभौमिक मापदंड "लोगों के काम" हैं, यह लोगों को प्राप्त परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ज्योति (व्यवस्था और सुसमाचार) में उन्होंने किस प्रकार अपने जीवन को जीया, उसके अनुसार होगा।

वचन 16 में पौलुस के कहने का अर्थ है कि सुसमाचार केवल यीशु मसीह के द्वारा उद्धार का प्रचार नहीं करता, लेकिन यीशु मसीह के द्वारा अंतिम न्याय के दिन लोगों के सभी भले और बुरे कामों के न्याय का भी प्रचार करता है (मत्ती 25:31-46; यूहन्ना 5:22,27-29)। सभी लोगों और उनके सभी छिपे रहस्यों के बारे में परमेश्वर के धर्मी न्याय की घोषणा सुसमाचार की एक उत्कृष्ट विशेषता है।

परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर के न्याय से बचने की दवा नहीं है!

परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के सुसमाचार की घोषणा में

परमेश्वर के क्रोध और न्याय की घोषणा भी शामिल होनी चाहिए!

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 2:1-16 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 2:1–16 से संभावित लागूकरणों के उदाहरण।

2:1 जब आप स्वयं वही गलत काम करें तो दूसरो पर फैसला देने से सावधान रहें।

2:3 जब आप गलत करते हैं तो आप परमेश्वर के न्याय से बच नहीं सकते।

2:4 दुष्ट लोगों के प्रति दयालु, सहनशील और धीरजवंत रहें, ताकि उन्हें पश्च्यााताप का अवसर मिल सके।

2:5 जब आप पश्च्यााताप नहीं करते तो आप अपने खिलाफ परमेश्वर के क्रोध को जमा करते हैं।

2:6 आप जो करते हैं (आप कैसे जीते हैं) उस पर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर उसी आधार पर आपका न्याय करेंगे।

2:7 भलाई करने में दृढ़ रहें, क्योंकि आप नए भविष्य में आशा रखते हैं।

2:8 बाइबल में सत्य को कभी अस्वीकार न करें।

2:11 कभी पक्षपात न करें!

2:12 मसीह आपका न्याय बाइबल और आपके हृदय में उसके ज्ञान के प्रकाशन के अनुसार करेंगे।

2:13 मसीह आपका न्याय, आप कैसे जीए और आपने उनके प्रकाशन का कैसे पालन किया, इस आधार पर करेंगे।

2. रोमियों 2:1–16 के आधार पर व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर एक मसीही होने के नाते मेरे कार्यों के अनुसार मेरा न्याय करेंगे। वह मेरा न्याय यह पता लगाने के लिए नहीं करेंगे कि क्या उन्हें मुझे धर्मी ठहराना चाहिए, लेकिन मेरे विश्वास की गुणवत्ता और उद्धार के फल को परखने के लिए।

मुझे भलाई करने के लिए दृढ़ रहना चाहिए क्योंकि मेरे पास भविष्य की एक वास्तविक आशा है!

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 2:1–16 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. <u>प्रतिबद्धता</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 2:1-16 का <u>प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें</u>।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यहोशू 1,6** और **न्यायियों 2,7** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ। याद करना। (1) **रोमियों 1:16।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
4. <u>शिक्षा देना</u>। मत्ती 13:24-30 और 36-43 में निहित **"गेहूं के बीच जंगली बीज"** की तैयारी करें।
5. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
6. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर <u>अपने लेख का अद्यपन करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।